ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592644

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

लौकिक संस्कृत साहित्य में सौन्दर्य शास्त्रीय चिन्तन का स्वरूप

श्रुति कक्कर [1]
[1] सहायक अध्यापक, शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किला भवन इन्दौर (म.प्र.)

शोध-सारांश
रामायण और महाभारत को महाकाव्य माना जाता है जो भारतीय साहित्य की उन्नत परम्परा के दो प्रतिनिधि ग्रन्थ हैं। इनके अध्ययन से उस समय प्रचलित कला की स्थिति का ज्ञान होता है। ''रामायण'' और ''महाभारत'' काल तक चित्रकला, मूर्तिकला व वास्तुकला का पर्याप्त विकास हो चुका था।

मुख्य शब्द – लौकिक, सौन्दर्य, स्वरूप

Cite This Article: श्रुति कक्कर. (2019). "लौकिक संस्कृत साहित्य में सौन्दर्य शास्त्रीय चिन्तन का स्वरूप." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 268-273. https://doi.org/10.5281/zenodo.3592644.

रामायण में कला के लिए ''शिल्प'' शब्द का प्रयोग हुआ है तथा उसका अर्थ ललित कलाओं से लिया गया है। इस समय कला को अत्यन्त पवित्र स्थान प्राप्त था वह केवल मनोरंजन के साधन के रूप में प्रयुक्त नहीं होती थी। बालकाण्ड के छठे सर्ग में वाल्मिकी ने अयोध्या के नागरिकों का जो वर्णन किया है उससे पता चल जाता है कि वह कितने सुसंस्कृत, कलाभिज्ञ, सौन्दर्यप्रिय एवं सहृदय नर-नारी थे।उस समय के इस कला प्रवण सौन्दर्य-प्रिय समाज के प्रभाव से राम भी अछूते नहीं रह गये थे क्योंकि एक प्रसंग में महामुनि ने राम को वैहारिकाणां शिल्पानां ज्ञाता कहा है अर्थात् राम को मनोरंजन के प्रयोग में आने वाली संगीत, वाद्य, चित्रकला आदि शिल्पों की जानकारी थी। वाल्मीकि ने चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, रंगमंच, नृत्य और स्थापत्य कला के विषय की पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत की है।

चित्रकला

रामायण में चित्रकला का उल्लेख कई बार किया गया है क्योंकि रामायण में वर्णित प्रत्येक भवन कलात्मक चित्रणों से सज्जित है। राजप्रासादों में चित्रशाला एक महत्वपूर्ण स्थान रखती थी। वाल्मीकि ने इनके लिए चित्रशालागृहाणि''शब्द का प्रयोग किया है जिससे कि विभिन्न प्रकार की चित्रशालाओं अर्थात् राजमहल में स्थित व्यक्तिगत अथवा सार्वजनिक चित्रशालाओं का ज्ञान होता है।

कैकेयी के महल का वर्णन करते समय वाल्मीकि ने उस समय महल में अंकित ''चित्रगृह'' का भी उल्लेख किया है जिसमें तोते, मोर, हंस आदि पक्षी कलरव कर रहे थे, वहाँ वाद्यों का मधुर घोष गूंज रहा था बहुत सी दासियों की भीड़ थी, तथा चित्र गृह उस महल की शोभा वृद्धि कर रहे थे। रामायण काल में चित्रकला का

स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता था। इसका प्रयोग अलंकरण के रूप में भवनों तथा प्रासादों की भित्तियों, वातायनों तथा विमानादि की सजावट के रूप में होता था। रावण का पुष्पक विमान उस युग के शिल्पियों के कला कौशल का अद्‌भुत उदाहरण है, जिसमें स्वर्ण खचित चित्रकारी की गई थी।उत्तरकाण्ड में बताया गया है कि पुष्पक विमान अत्यन्त सुन्दर व चित्त को प्रसन्न करने वाला और उसके अन्दर अत्यन्त ही आश्चर्यजनक चित्र तथा अलंकरण अंकित थे।पंचम काण्ड के सप्तम् सर्ग में (5/7/11-22) पुष्पक विमान और रावण के भवन का विस्तार से वर्णन किया गया है जो उस समय की कला का ज्ञान कराता है।

इसके अतिरिक्त वाल्मीकि ने लंकापुरी का वर्णन करते समय उसके तोरण द्वारों का भी उल्लेख किया है जिसके मुख्य प्रवेश द्वार सोने के बने हुए थे तथा भित्तियाँ पुष्पित लता-वल्लरी से चित्रित थीं।साथ ही श्रीराम के भवन में भी शिल्पियों ने बहुत सुन्दर मणिकुट्टिम का कार्य किया था, जिसकी शोभा समस्त प्राणियों के मन व नेत्रों को आकृष्ट करती थी। किष्किन्धा काण्ड के पंचविश सर्ग में उस पालकी का वर्णन है जिसमें बाली का शव शमशान भूमि ले जाया गया था। इस पालकी में कृत्रिम पक्षी और वृक्ष बनाये गये थे। वह पालकी चित्र के रूप में बने सिपाहियों से भरी हुई प्रतीत हो रही थी तथा मनोहर शिल्प कर्म से सुशोभित थी। उस पालकी को विचित्र शोभा से सम्पन्न बनाया गया था। (4/25/22-25)

मूर्तिकला

रामायण काल में मूर्ति निर्माण होने लगा था, इसका स्पष्टीकरण रामायण के उस मार्मिक प्रसंग से होता है जबकि अशवमेघ यज्ञ में राम ने अपनी अर्धागिंनी सीता की मूर्ति का निर्माण कराया था।गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरित मानस के लवकुश काण्ड में यह उल्लेख किया था कि यह प्रतिमा इस प्रकार सजी हुई थी कि कामदेव भी उसे देखकर लज्जित हो जाएँ तथा कोई भी स्त्री-पुरुष उस मूर्ति को ना पहचान पाये कि वह कृत्रिम है। इससे उस समय के शिल्प कौशल की सूचना मिलती है।

रावण के शयनागार के वर्णन में यह उल्लेख किया गया है कि वहाँ मोती, हीरे, मूंगे, चाँदी, सोने द्वारा अनेक आकार अंकित किए गये थे।राम के भवन का अग्रभाग देव प्रतिमाओं से सुसज्जित था।पुष्पक विमान उस समय के शिल्पियों की अद्‌भुत कृति थी जिसमें भेड़ियों की मूर्तियों से युक्त असंखय खम्भे बनाए गए थे।

उस विमान में अनेक प्रकार के रत्नों से विचित्र वर्णो के सर्पों व सुन्दर अंग वाले अश्व बनाए गए थे। इस विमान में सुन्दर मुख व मनोहर पंख वाले अनेक पक्षी निर्मित हुए जिनके पंख मूँगे और सुवर्ण से युक्त थे तथा राजलक्ष्मी के चित्र में लक्ष्मी के अभिषेक कार्य में नियुक्त हाथी बनाए गए थे जो अपनी सूंड में कमल पुष्प धारण किए हुए थे तथा लक्ष्मी की प्रतिमा का अभिषेक चित्रित था।

इसी प्रकार रथों की साज सज्जा में भी सुवर्ण प्रतिमाओं का प्रयोग उस युग में होता था। उस युग में स्थापत्य कला भी विकसित थी। अनेक प्रकार के भवन, प्रासाद, विमानादि की उस युग में रचना की गई तथा मय नामक दानव और विश्वमकर्मा जैसे प्रवीण शिल्पियों ने इनकी रचना की थी।

महाभारत

महाभारत काल में भी कला का विकास हुआ परन्तु रामायण की भाँति महाभारत में चित्रकला अधिक विकसित नहीं थी। कला का अधिकांश उल्लेख महाभारत के सभापर्व में ही हुआ है जिसमें मय दानव के द्वारा बनाए गए युधिष्ठर के सभा भवन का वर्णन है जो कि सर्वरत्नों से सुशोभित विचित्र सभा थी। इस सभा में एक सरोवर का निर्माण किया गया था जिसमें खिले हुए कमल, मछली तथा कछुओं को चित्रित किया गया

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592644

था।इस सभा में स्फटिक के प्रभाव से ऐसे सरोवर का निर्माण किया गया था जो देखने में धरती लगती थी और दुर्योधन अज्ञानवश इसमें गिर गया था तथा एक स्थान पर स्फटिक के प्रभाव से ही स्थल भाग को सरोवर का छलावा दिया गया जहाँ दुर्योधन ने अज्ञानवश अपने कपड़े ऊँचे कर लिये थे।

सभा भवन में एक ऐसा चित्र खींचा गया था जो वास्तविक दरवाजा लगता था परन्तु प्रवेश करते ही व्यक्ति का सिर दीवार से टकरा जाता था।सभा भवन में अनेक स्तम्भ थे तथा भाँति भाँति के चित्रों की रचना की गई थी। इस सभागृह के वर्णन से उस समय के स्थापत्य व भित्तिचित्रण कला का पता चलता है।

इसके अतिरिक्त महाभारत में कई ऐसे प्रसंग है जिनसे तत्कालीन मूर्तिकता का ज्ञान होता है। द्रोणाचार्य के शिष्य एकलव्य ने अपने गुरू की मूर्ति बनाकर स्थापित की तथा उसके समक्ष धनुर्विद्या का अभ्यास किया था। (कृत्वा द्रोणांमहीमयम्-आदिपर्व),क्योंकि द्वाद्र होने के कारण गुरू ने उसे शिक्षा देने से मना कर दिया था । महाभारत (3/293/13) में सत्यवान को घोड़ों का शौक था। अतः इसी शोक के कारण उसने वन में अपने माता-पिता के साथ रहते हुए मिट्टी के घोड़े बनाए तथा भीत पर घोड़ों के चित्र अंकित किए।

सौन्दर्य की मूर्त रूप की रचना प्रक्रिया के सम्बन्ध में सबसे अधिक मार्मिक संकेत कालिदास के साहित्य में मिलते हैं सौन्दर्य के विविध तत्व हैं। प्रथम तो सुन्दर वस्तु में प्रतिक्षण नूतनता का आविर्भाव होता है। दूसरा सौन्दर्य की अनुभूति में पूर्व अनुभव, जन्मजन्मान्तर में होने वाले संस्कारों के अद्भुत होने पर पूर्वानुभूत सौन्दर्य की स्मृति और तीसरा पृथ्वीतल पर होने वाला समग्र सौन्दर्य तथा सौन्दर्य में दिव्य तत्व की एक झाँकी प्राप्त होती है।इनमें द्वितीय तथ्य का प्रकाशन कालिदास ने अपने नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में किया है जब राजा दुष्यन्त शकुन्तला को छोड़कर अपने नगर लौट आते हैं वहाँ मधुर गीत का श्रवण करने पर वह दुःखी हो जाते हैं। ऐसा होने का तात्पर्य है कि उसके मन के पूर्व संस्कार जागृत हो गए थे।

कालिदास के नाटकों में भी हमें कलाओं के उल्लेख प्राप्त होते हैं उनके काव्य में स्वभाविक चित्र, विद्व चित्र अनेक स्थानों पर मिलते हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् के छठे अंक में हमें चित्रकला के अनेक उदाहरण मिले हैं जिसमें शकुन्तला के सौन्दर्य का चित्रण है। दुष्यन्त ने शकुन्तला के चित्र में अंग-प्रत्यंग इतने सुन्दर बनाए है कि विदूषक की आँखे लड़खड़ाने लग गई।

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में दुष्यन्त एक कुशल चित्रकार है इसका पता उस श्लोक से चलता है जिसमें सानुमति दुष्यन्त द्वारा बनाए शकुन्तला के चित्र को देखकर कहती है कि चित्र ऐसा जान पड़ता है कि सखी शकुन्तला समक्ष ही खड़ी हो।परन्तु दुष्यन्त इस चित्र से सन्तुष्ट नहीं थे क्योंकि उनका मानना था कि इस चित्र में देवी की सुन्दरता बहुत कम खिंच पाई हैं उसमें अनेक त्रुटियाँ व दोष हैं। कालिदास मूलतः सौन्दर्य के कवि हैं उन्होंने स्थान-स्थान पर कलात्मक सौन्दर्य के स्वरूप, सृजन-प्रक्रिया और आस्वाद आदि का मार्मिक चित्रण किया है। सौन्दर्य के प्रभाव के विषय में कालिदास का स्पष्ट मत है कि वह चेतना का परिष्कार अथवा उन्नयन करता है।

यह विवेचन यह सिद्ध करने का प्रयास करता हैं कि भारत की मानव सम्भ्यता जितनी प्राचीन है सौन्दर्य बोध भी उतना ही प्राचीन है। यह एक भ्रामक धारणा पाशचात्य विद्वानों में थी कि सौन्दर्यशास्त्र का अध्ययन 18वीं शताब्दी में स्वयं प्रतिष्ठित शास्त्र के रूप में हुआ। सौन्दर्य बोध तथा उसका अध्ययन एवं विवेचन अत्यन्त प्राचीन काल से प्रचलित तथ्य हैं। यह कहा जा सकता है कि जब तक वेदों का प्रकाशन, अनुवाद आदि नहीं हुआ था हमें वैदिक विषयों के सौन्दर्य का ज्ञान नहीं था।

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3592644

इसी प्रकार नाट्यशास्त्र की प्रथम पाण्डुलिपि के अध्ययन तथा प्रकाशन तक पाश्चात्य विद्वानों का दावा तथ्यपरक प्रतीत होता था परन्तु प्राचीन भारतीय संस्कृति, वैदिक साहित्य, नाट्यशास्त्र एवं शिल्प शास्त्रीय ग्रन्थों के प्रकाशन के बाद यह भ्रामक सिद्ध हो गया। वैदिक ऋषि कवि थे उन्होंने प्राकृतिक सौन्दर्य के अपने आत्मदर्शन को काव्य का विषय बनाया। इस सौन्दर्य का वर्णन करते हुए सौन्दर्य के विविध पक्षों, विषयगत गुणों, विषयीगत प्रक्रिया एव अनुभूतियों का उल्लेख तथा सौन्दर्य के सांसारिक तथा पारलौकिक पक्षों का वर्णन उनकी कविता में मिलता है।

इसी प्रकार रामायण, महाभारत तथा कालिदास, भवभूति, माघ, आदि की कविता में सौन्दर्य के तत्वों तथा गुणों का उल्लेख है। वास्तु, चित्र, मूर्ति, नृत्य, संगीत, आदि सभी कलाओं की उन्नत अवस्था का दर्शन हमें साहित्सक वर्णनों में मिलता है। यद्यपि चित्रकला, मूर्तिकला आदि के वास्तविक उदाहरण हमें बहुत बाद में प्राप्त होने लगते हैं जिनमें से अधिकांश नष्ट भी हो गये हैं। तथापि साहित्यिक उल्लेखों तथा सौन्दर्यशास्त्रीय ग्रन्थों की प्राप्ति से सौन्दर्यानुभूति की प्रक्रिया, सौन्दर्य का स्वरूप, चित्तवृत्ति को आकर्षित करने की क्षमता का अभिज्ञान का प्रमाण हमें मिलता है इन ग्रन्थों से सौन्दर्यानुभूति की प्रक्रिया में कलाकार, सहृदय दर्शक, श्रोता और कलाकृति, जो सौन्दर्य के शास्त्रीय अध्ययन के तीन आधार स्तम्भ हैं से संबद्ध प्रश्नों का समाधान होता है।